द्वितीय अध्याय

''सुशीला टाकभौरे की कहानियों का वस्तुगत अध्ययन''

सुशीला टाकभौरे की कहानियों का वस्तुगत अध्ययन

डा. सुशीला टाकभौरे आधुनिक युग के दलित साहित्यकारों में प्रमुख स्थान रखती हैं। उनकी कहानियाँ नारी मन के अंतर्द्वंद्व और दलित समस्याओं को समाज के सम्मुख लाती हैं। उनकी अधिकतर कहानियाँ मनोविश्लेषणात्मक, विद्रोहात्मक तथा आत्मकथात्मक हैं। उनकी कहानियों में दलितों को न्याय मिला है। सुशीला जी ने कहानियों में अपने भाव, विचार, जीवन की घटनाएँ और अनुभवों को प्रस्तुत किया है। उनकी कहानियों में सामाज में व्याप्त जातिभेद, सामाजिक असमानता, छुआछूत की भावना और दलित समाज के पीड़ित व्यक्ति द्वारा भोगे गए अनुभवों का कथन है। कुछ कहानियों में आत्मवक्ता स्वयं लेखिका एक पात्र के रूप में हैं। उन्होंने नारी के अंतर्मन की छटपटाहट को अच्छी तरह से चित्रित किया है।

सुशीला टाकभौरे के दो कहानी संग्रह हैं -

1. 'टूटता वहम'
2. 'अनुभूति के घेरे'

इन दो कहानी संग्रहों में कुल 20 कहानियाँ हैं। इन कहानियों में अनेक खूबियाँ एवं विशेषताएँ भरी पड़ी हैं। वस्तु-तत्त्व की दृष्टि से इनका अध्ययन एक-एक कहानी संग्रह को लेकर किया जाएगा। लेकिन यह देखना आवश्यक है कि, कहानियों में वस्तु-तत्त्व का क्या महत्त्व है ?

2.1 कहानियों में वस्तु-तत्त्व का महत्त्व -

कथावस्तु कहानी का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उपकरण है। कहानी की कथावस्तु लेखक के जीवनानुभव की उपज होती है। किसी भी कथानक का प्राणतत्त्व कथावस्तु होती है। बिना कथावस्तु से कहानी बिना हड्डियों के ढाँचे का मनुष्य लगती है। कहानी का मूलाधार कथावस्तु ही होती है। इसी के अंतर्गत कहानी के अन्य सभी तत्त्व समाए हुए दीख पड़ते हैं। इसी कारण इसका

महत्त्व और भी बढ़ जाता है। कहानी के अन्य सभी तत्त्व इसी एकमात्र तत्त्व पर निर्भर होते हैं। इसी कारण कथावस्तु कहानी के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है।

कहानी की कथावस्तु संक्षिप्त होती है। आरंभ से लेकर अंत तक कहानी पाठक के हृदय में कौतूहल तथा उत्सुकता बनाई रखती है। मौलिकता कहानीकार की प्रतिभाशक्ति की परिचायक होती है। कथावस्तु में रोचकता और क्रमबद्धता होती है, जिससे कहानी प्रवाहशील बनी रहती है। इसके साथ ही कहानी में विश्वसनीयता और यथार्थपरकता भी होती है।

कहानी की कथावस्तु के बारे में कहा जाता है कि वह न तो छोटी हो या न अधिक बड़ी। कथा एक ही बैठक में पढ़ी जा सके, इसी कारण इसमें पात्रों की संख्या भी कम होती है। कथोपकथन या संवाद बहुत ही रोचक, संक्षिप्त होते हैं, जिनके माध्यम से कथानक जल्द-से-जल्द अपने उद्देश्य तक पहुँचता है।

सैद्धांतिक स्वरूप के अनुसार कथावस्तु ही वह प्रारूप है, जो कहानी के निर्माण में आधारभूत रूप से कार्य करता है। आरंभ से ही कहानी-पाठक को कहानी में आगे घटित होनेवाली घटनाओं का आभास मिलता है। जिससे उसके मध्य का संबंध, आरंभ तथा अंत में प्रस्तुत सूत्रों से होता है। तथा अंत का संबंध आरंभ और मध्य में आयोजित घटना-सूत्रों से ही होता है।

डॉ. प्रतापनारायण टंडन ने कहानी की कथावस्तु के बारे में लिखा है - "सामान्य साहित्य की भाँति ही कहानी की कथावस्तु का विषय क्षेत्र भी अत्यंत व्यापक है। कहानी का प्राणतत्त्व होने के कारण यह कथावस्तु मानव जीवन और मानव स्वभाव की भाँति ही प्रशस्त क्षेत्रवाली होती है। कहानी की कथावस्तु में निबद्ध घटनाएँ और कार्य व्यापार कहानी की गतिशीलता में वृद्धि करते हैं।"[1]

वास्तव में कथावस्तु कहानी का केंद्रीय आधार होता है। अन्य सभी तत्त्व कथावस्तु के सहायक और पूरक होते हैं। वे कथावस्तु में निबद्ध घटनाओं को प्रभावपूर्ण बनाने के लिए विविध सूत्र जुटाते हैं और कहानी को स्वरूपगत परिपूर्णता प्रदान करते हैं। इस दृष्टि से कहानी की कथावस्तु विविध घटनात्मक विवरणों के आधार पर निर्मित होती है। कथावस्तु संक्षिप्त, रोचक, मौलिक,

क्रमबद्ध और विश्वसनीय होनी आवश्यक है। उसमें उत्सुकता, शिल्पगत नवीनता, प्रभावात्मक एकता आदि गुण होने आवश्यक हैं।

कहानी के आरंभ में मूल प्रतिपाद्य, उसकी वास्तविक समस्या का संकेत और मुख्य पात्रों के परिचय किसी-न-किसी रूप में होते हैं। उसमें कहानी का उद्देश्य अवश्य सन्निहित होता है। कहानी के मध्य में समस्या का परम् विस्तार तथा अंतर्द्वंद्व का आरोह-अवरोह पूर्णत: स्पष्ट हो जाता है। रचना विधान की दृष्टि से कथावस्तु का मध्यभाग ही कहानी का विकास-भाग है। इस भाग में कौतुहल को महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। कहानी के अंत में कौतुहल और कहानी का संपूर्ण अभिप्राय स्पष्ट हो जाता है। यहाँ कहानी का कार्य पूर्ण हो जाता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि कहानी के लिए कथावस्तु या वस्तु-तत्त्व महत्त्वपूर्ण होता है। उपर्युक्त विवेचन के आधार पर सुशीला टाकभौरे की कहानियों के वस्तु-तत्त्व को परखना आवश्यक है।

2.2 डा. सुशीला टाकभौरे की कहानियों में वस्तु-तत्त्व -

सुशीला टाकभौरे की कहानियों में वस्तु-तत्त्व को देखने के लिए उनके कहानी-संग्रहों को क्रमश: देखा जाएगा और उनकी कहानियों में वस्तु-तत्त्व परखा जाएगा।

2.2.1 'टूटता वहम' -

सन् 1997 में प्रकाशित इस कहानी-संग्रह में कुल 9 कहानियाँ हैं। इन कहानियों की विशेषता यह है कि इनमें से अधिकतर कहानियाँ विद्रोहात्मक हैं और दलित समाज के जीवन से संबंधित हैं। अपनी कहानियों में उन्होंने दलित समाज की स्थिति का चित्रण किया है। इन कहानियों के माध्यम से उन्होंने दलितों को अन्याय के खिलाफ लड़ने तथा उनमें नई चेतना जगाने का प्रयास किया है। यह भी बताया है कि वाल्मीकि समाज को कोई भी कदम उठाने से पहले अपनी सही स्थिति समझनी होगी तभी वह सही कदम उठा पाएगा।

कहानी-संग्रह के आरंभ में भूमिका के रूप में लेखिका ने अपने विचार व्यक्त किए हैं इसी कारण लेखिका कहानियों के बारे में क्या सोचती हैं या उनकी मानसिकत कैसी है इस बात क पता चलता है। उनकी कहानियों की कथावस्तु निम्नानुसार है -

2.2.1.1 'झरोखे' -

इस कहानी के शीर्षक से ही ज्ञात होता है कि, लेखिका ने अपने अतीत को, स्मृतियों के झरोखे से देखा है। दलित बच्चों पर ऐसे संस्कार किए जाते हैं कि 'हम अछूत हैं', 'नीची जाति के हैं'। परंतु इस कहानी में यह वहम टूटता हुआ नजर आता है। दलित लोग अपनी नई पीढ़ी के मन में बचपन से यह भावना भर देते हैं। इस प्रकार की हीन ग्रंथी बन जाने के बाद बच्चों का व्यक्तित्व विकसित नहीं हो पाता है। बच्चे सर्वगुण संपन्न होने के बाद भी उनमें पूर्ण आत्मविश्वास नहीं होता है। दलित लोगों को सोचना चाहिए कि - ''हम दूसरों को दोष देने से पहले अपनी गलती देखें और सिर्फ अपनी गलती देखते रहे तब हमें दूसरों का दुर्व्यवहार नजर नहीं आता है। उनकी सिर्फ अच्छाई नजर आती है और ऐसा नहीं होता है, तो अपनी ही गलती मानकर चुप रहना चाहिए।''[2]

ये पीढ़ीगत संस्कार लेखिका पर भी हुए हैं। परंतु उनकी माँ उन्हें पढ़-लिखकर आगे बढ़ने का हौसला देती है। इसी कारण लेखिका के मन में आत्मविश्वास कि कमी नहीं रहती है। संस्कारवश छुआछूत का डर लेखिका के मन में रहता है। इन्हीं संस्कारों की वजह से वह हमेशा संकोच में रहा करती थी कि कोई दूरावपूर्ण या अपमानजनक व्यवहार न करें। कोई किसी प्रकार का एतराज न माने। उनके मन में भी यह वहम था कि हम निम्न जाति के हैं। लेकिन निम्न जाति की होने के बावजूद भी उन्होंने कभी किसी को महसूस नहीं होने दिया कि, वे निम्न जाति की हैं। उल्टे उनके कला-गुणों की कद्र होती रहती है। सभी से अपनापन मिलता है।

लेखिका ने स्कूल में नाम दर्ज करने से लेकर कई स्मृतियाँ बताई हैं। उन्हें सभी गुरुजनों से अच्छे संस्कार मिले, जिसके कारण निम्न जाति की होने का भाव जाता रहा और संकोच की जगह आत्मविश्वास निर्माण होता है। वह अपने गुरूजनों, सहेलियों के साथ बैठकर खाना खाती, खेलती फिर भी उन्होंने भेदभाव महसूस नहीं होने दिया। उनको माता और गुरूजनों से संस्कार ते

मिले मगर अधिकार से लड़ने की शिक्षा में कमी रहती है। इसमें लेखिका पर हुए संस्कार और आदर्श जैसे कारण दिखाई देते हैं।

इस प्रकार लेखिका ने इनमें अपने जीवन में की हुई उन्नति के सोपानों को बताया है कि हम परिस्थितियों का सामना कर अपनी स्थिति में सुधार कर सकते हैं। जातिभेद के कारण अछूतों में हीन ग्रंथी की भावना भी पैदा होती है, जिससे उनमें संकोच का भाव पैदा होता है। इसी कारण वे स्वयं आगे नहीं बढ़ते हैं। अत: लेखिका दलितों को इस भावना से मुक्त होने का संदेश देती है।

2.2.1.2 ***'मेरा समाज'*** -

इस कहानी में दलित वाल्मीकि समाज की स्थिति का चित्रण किया है। साथ ही उनके पिछड़े रहने के कारण भी बताए हैं। दलित समाज के सम्मुख अनेक प्रकार की समस्याएँ हैं, जैसे - बेरोजगारी, आर्थिक विपन्नता आदि। लेखिका को शराब पीनेवालों से सख्त नफरत है। वे कहती हैं - ''शराब और आपसी झगड़ा यही इस समाज की सबसे बड़ी खराबी है।''[3]

दलित समाज अछूत, शूद्र वर्ण का कहलाता है। इस समाज के लोग स्वयं को वाल्मीकि कहकर गौरव का अनुभव करते हैं, लेकिन अपनी सामाजिक बुराइयाँ नहीं छोड़ते। इन लोगों की छोटी-सी दुनिया होती है। उसमें ही वे खुश रहते हैं। कोई पंचायत में काम करता है, तो कोई डाकबंगले में, कोई अस्पताल में तो कोई स्कूल में। परंतु इस प्रकार का काम करने में इन लोगों को संकोच नहीं होता है। अपने बापदादा करते आए हैं, इसलिए वे भी वही करते हैं। मैट्रिक, बी.ए. पास लड़के भी अच्छी नौकरी न मिलने पर इसी प्रकार की नौकरी करते हैं। कुछ लोग ऐसे हैं, जो सुबह आठ बजे तक बिस्तर में पड़े रहते हैं और अपना कार्य छोटे बच्चों पर सौंपते हैं। इसी कारण बच्चे पढ़ नहीं पाते हैं।

लड़कियों की शादी 15 या 16 वर्ष की आयु में होती है। ये लोग इससे आगे की सोच नहीं पाते हैं। बेटी का जन्म होते ही उसकी पढ़ाई की अपेक्षा शादी की चिंता की जाती है। शादी और बच्चे जैसे उनके जीवन का लक्ष्य रहता है। ससुराल में भी घर का सारा काम उसीको ही करना पड़ता है। अधिकांश लड़कियों को अपने पति की मार, सास की गालियाँ और ननदों के ताने मिलते रहते हैं।

हर घर में झगड़ा दिखाई देता है, कभी भाई-भाई का, बाप-बेटों का, कभी सास-बहू का तो कभी ननद-भौजाई का झगड़ा। झगड़ा कैसा भी हो, हर पुरुष अपना गुस्सा अपनी पत्नी पर ही निकालता है।

इस प्रकार की परंपराप्रिय विचार धारा को तोड़ना आवश्यक है तभी यह समाज नए विचारों को अपनाएगा और शिक्षा के प्रति जिज्ञासु रहकर आत्मनिर्भर बनेगा। युवा शिक्षित पीढ़ी की सहायता से लेखिका इस स्थिति को बदलना चाहती है।

2.2.1.3 ***'व्रत और व्रती'*** -

यह कहानी उस अभावग्रस्त युवक की है, जो अपने परिवार से दूर दिल्ली जैसे बड़े शहर में नौकरी के लिए दर-दर भटकता है। इस कहानी में धर्म के आडंबरों की समस्या को उठाया है। इसमें जो धर्मपाल है, वह अपने दुःख दूर करने तथा भगवान की कृपा हो इसलिए भगवान का व्रत करता है। वह पूर्ण मनोयोग से गणेश जी की पूजा करता है। वह कड़ी सर्दी में सुबह पाँच बजे से एकाग्रता से भगवान का ध्यान करता है। परंतु उसे भगवान के दर्शन नहीं होते हैं। वह बीमार मात्र पड़ जाता है।

दूसरी बार जन्माष्टमी के दिन भगवान श्रीकृष्ण का व्रत करता है। दिनभर भूखा रहकर वह उपवास करता है। वह कहता है - ''मैं आज किसी भी तरह से अपना संकल्प टूटने नहीं दूँगा। मुझे भगवान से मदद चाहिए और भगवान तभी मदद करेंगे जबकि उनका व्रत नियम के अनुसार समय पर पूर्ण किया जाए।''[4] दोपहर से उसकी हालत बिगड़ने लगती है। और कई बार चाय पीने के बाद भी वह बार-बार कुछ खाने के लिए तड़पता है। शाम को पूजा के बाद खाना खाता है। परंतु ज्यादा खाने से सब उबल पड़ता है। उसे खाली पेट सोना पड़ता है। अंत में वह संकल्प करता है कि -''किसी देवता के नाम से व्रत, उपवास नहीं करेगा, मेहनत और कमाई से अपना पेट भरना पड़ेगा। इस भागती मशीनी जिंदगी में अपने पेट की आग बुझाने का इंतजाम स्वयं ही करना पड़ेगा।''[5]

इस प्रकार हमारी इतने एकाग्र मन और तर्पण-समर्पण की भावना से उन्नति का भांडार हमारे सम्मुख खुला रहेगा। इस कहानी में धर्म के आडंबरों पर व्यंग्य किया है।

2.2.1.4 मंदिर का लाभ -

प्रस्तुत कहानी में दलितों की हिंदू धर्म और भगवान में होनेवाली आस्था की तटस्थ मीमांसा की है। वे मंदिर तो बना लेते हैं परंतु अपने समाज की स्थिति को नहीं सुधारते हैं। इसमें एक ही भगवान को माननेवाले सवर्ण और अछूतों के बीच जातिभेद और छुआछूत की भावना का चित्रण किया है।

इसमें नानी एक रूढ़ीवादी नारी है। उसे बेटा न होने के कारण अपनी बहन के बेटे के यहाँ रहती है, न कि अपनी बेटी के पास। वह मानती है कि, उद्धार तो बेटों से ही होता है। अतः बुढ़ापा बढ़ने के साथ उसका अपनी बहन के बेटों से प्रेम बढ़ता गया। नानी के पास पूर्वजों की कमाई का बहुत रुपया होता है। उसकी इच्छा एक मंदिर बनवाने की होती है। अतः उसकी निगरानी में एक राधा-कृष्ण का मंदिर बनवाया जाता है। मंदिर का सारा खर्चा नानी करती है। मंदिर में मूर्ति की स्थापना करने के लिए कोई पंड़ित या पुजारी नहीं आता है। नानी के कहने पर एक पंड़ित (वामन) सामान्य पूजा-विधि कर भगवान की स्थापना करता है। वह हर रोज भगवान की पूजा करने को कहता है। नानी की बहन का बेटा हर रोज भगवान की पूजा करता है।

कुछ दिन पश्चात् नानी कैंसर से पीड़ित होती है। खाना-पीना बंद हो जाता है। फिर भी नानी अपनी बेटी के पास नहीं आती है। मृत्यु के बाद उसकी सारी संपत्ति उसके बहन के बेटे हड़प लेते हैं। अगर नानी अपना सारा रुपया वाल्मीकि समाज सुधार में लगाती तो समाज का बहुत भला हो जाता। मंदिर केवल एक वास्तु बनकर उपेक्षित रहता है, उनके समाज के लिए कोई लाभ नहीं होता।

इस कहानी में धर्मांधता के प्रति विरोध दिखाया है। दलित समाज के लोग अपनी उन्नति की गति भगवान के भरोसे छोड़ देते हैं। वे यह नहीं जानते कि जब तक अपनी उन्नति के विषय में हम खुद नहीं सोचते हैं, तब तक कोई भगवान या कोई मंदिर उन्हें लाभ नहीं दे सकता।

2.2.1.5 'मुझे जवाब देना है' -

इस कहानी में बताया है कि शिक्षित दलितों का काम केवल अपने घर की साज-सज्जा करने तक सीमित नहीं है। इससे आगे कुछ करना है। अच्छा खाना, अच्छा पहनना इतना सीमित

उनको नहीं होना चाहिए, बल्कि समाज की प्रगति में इनका योगदान भी आवश्यक है।

लेखिका के घर उनके पति के मित्र एक मीटिंग के सिलसिले में आते हैं। इससे पहले वे उनको एक अधिवेशन में मिले थे। उनकी इच्छा है कि लेखिका इस अधिवेशन के समापन के समय खुले चर्चासत्र में हिस्सा लें। विद्वानों के सामने कुछ ऐसे प्रश्न रखें कि लोग उनकी बुद्धि-विवेक को मान्यता प्रदान करें। भाईसाहब की यह भी इच्छा है कि, लेखिका मीटिंग में अपने विचार समाज के सामने रखें। वे महिला प्रतिनिधि के रूप में कुछ बोलें। वे अपना सारा समय नाश्ता बनाने में लगाती हैं। मीटिंग की कुछ भी बातें वे नहीं सुनती हैं। फिर भी वे अनगढ़ रूप में अपने विचार रखती हैं। इससे उसका समाधान नहीं होता। उसके मन में ग्लानि निर्माण होती है कि, "यह महंगा फ्लैट, यह घर की साज-सज्जा सब बेकार है। जीवन का उद्देश्य घर सजाना, सुख भोग करना, मात्र धन कमाना नहीं है। इतना धन इस व्यर्थ की साज-सज्जा पर क्यों खर्च करें। इसका उपयोग समाज के लिए हो सकता है। हमें कुछ करना है, पूरे समाज के लिए, मानव समाज के लिए, साधारण जीवन का मूल्य समझना है। आदर्शों की मात्र कल्पना करने, सिर्फ विचार करने से तो कुछ नहीं हो सकता। अन्यथा उन आँखों के सामने मैं गुनहगार क्यों साबित होती।"[6]

इस प्रकार कहानी में बताया है कि संपन्न शिक्षित दलित अपने समाज से दूर रहना चाहता है जो कि गलत है। दलित समाज का शिक्षित और संपन्न वर्ग अपने समाज की स्थिति को सुधारने का प्रयत्न कर रहा है। समाज की प्रगति में उनका भी योगदान महत्त्वपूर्ण है। इस कहानी में झूठे दिखावे और शान-शौकत पर व्यंग्य किया है। संपन्न दलित अपने समाज में प्रगति और परिवर्तन के लिए अधिक योगदान दें यही संदेश लेखिका देना चाहती है।

2.2.1.6 'सिलिया' -

यह कहानी एक दलित कन्या की है, जो आत्मविश्वास के साथ पढ़ाई कर अपने समाज को सुधारना चाहती है। इसमें समाज में व्याप्त जातिभेद, छुआछूत, असमानता की भावना आदि समस्याओं को उठाया है। एक दिन 'नई दुनिया' अखबार में एक विज्ञापन छपता है - 'शूद्र वर्ण की वधु चाहिए।' मध्य प्रदेश के भोपाळ के जाने-माने युवा नेता सेठी जी अछूत कन्या से विवाह करके एक

आदर्श निर्माण करना चाहते हैं। सभी सिलिया की माँ को सलाह देते हैं। परंतु सिलिया की माँ कहती है - "नहीं भैया, यह सब बड़े लोगों के चोचले हैं। आज समाज को दिखाने के लिए हमारी बेटी से शादी कर लेंगे और कल छोड़ दिया तो .... हम गरीब लोग, उनका क्या कर लेंगे। अपनी इज्जत अपने समाज में रहकर भी हो सकती है। उनकी दिखावे की चार दिन की इज्जत हमें नहीं चाहिए। हमारी बेटी उनके परिवार और समाज में वैसा मान-सम्मान नहीं पा सकेगी, न ही हमारे घर की रह जाएगी। न इधर की न उधर की..... हम से दूर कर दी जाएगी। हम उसको खूब पढ़ाएंगे-लिखाएंगे, उसकी किस्मत में होगा तो इससे ज्यादा मान-सम्मान वह खुद पा लेगी..... अपनी किस्मत वह खुद बना लेगी।"[7]

सिलिया आत्मविश्वास के साथ अपनी पढ़ाई करती है। उसे सभी गुरुजनों से मान-सम्मान मिलता है। परंतु उसे बचपन की बातें याद आती हैं कि, जब उसकी मामी की बेटी मालती ने कुएँ का पानी पिया था तो मामी ने उसे कितना मारा था। वह जब पाँचवीं कक्षा में थी, तो टूर्नामेंट में भाग लिया था। टूर्नामेंट जल्दी खत्म होने के कारण वह अपनी सहेली के घर जाती है। उसकी मौसी ने सिलिया की जाति का नाम सुनने के उपरांत उसे पानी तक नहीं देती है। सिलिया इन बातों पर बहुत विचार करती है। उसके मन में अनेक नए विचार आते रहते हैं। उसे छुआछूत, जातिभेद, सेठी जी महाशय का ढोंग अच्छा नहीं लगता है। वह आगे पढ़-लिखकर स्वयं को बहुत ऊँचा साबित करती है। वह अपने समाज को उन्नति की ओर ले जाने के लिए प्रयास करती है। वह समाज से जातिभेद मिटाना चाहती है।

इस प्रकार इस कहानी में जातिभेद, छुआछूत और असमानता की भावना का चित्रण कर शिक्षा का महत्त्व बताया है। साथ ही यह भी बताया है कि, कुछ सवर्ण अच्छे भी हैं, जो दलितों को सहायता और प्रगति की प्रेरणा देते हैं।

2.2.1.7 'टूटता वहम' -

इस कहानी में सवर्ण और दलित जाति के शिक्षितों के बीच की मानसिक दूरी को प्रस्तुत किया है। आज देश इतना प्रगतिशील बना है, फिर भी जातिभेद और अस्पृश्यता की भावना

प्रचलित है। जातिभेद माननेवालों का आचरण सदा ही इसके विपरीत दिखाई देता है। परंतु आज दलित भी इस जातिभेद के मकड़ी जाल को समझ रहे हैं, पहचान रहे हैं। छल और दूरावे के व्यवहार को अपनी तर्क-बुद्धि से सोच रहे हैं। वे सोच रहे हैं कि - ''हम कुछ भी बन जाए, कुछ भी पा लें फिर भी जाति-व्यवस्था का संरक्षक हिंदू हमारे साथ हमेशा भेदभाव करेगा। हमारे साथ अन्याय करता रहेगा और हम धोखे की मुट्टी में पड़कर सदियों की चक्की में दुख, पीड़ा, वेदना, तड़प और बेचैनी के साथ पिसते रहेंगे।''[8]

जो लोग कभी शूद्रों को छूने की कल्पना नहीं कर सकते थे, आज वे उनके साथ बैठकर भोजन करते हैं। हाथों में हाथ मिलाकर बातें करने लगे हैं। यह बताने के लिए कि हम जातिभेद नहीं मानते। परंतु इसके पीछे सच क्या है ? ये राज दलित पहचान रहे हैं। अब उनका वहम टूटता नजर आता है। लेखिका जब नागपुर में शिक्षिका के पद पर आती है, तो संस्था के व्यवस्थापक बहुत खुश होते हैं। स्कूल में कभी कोई कार्यक्रम होता तो बड़े-बड़े अतिथि और वक्ता आते रहते हैं। व्यवस्थापक बाहर से आए प्रत्येक व्यक्ति से लेखिका का परिचय कराते समय उनकी जाति के बारे में बताते हैं। जाति का बार-बार उल्लेख करने के पीछे उनके मक्सद को लेखिका पहचान लेती है।

एक बार लेखिका सभी सहयोगी प्राध्यापिकाओं को अपने घर खाना खाने बुलाती है। तो सिर्फ चार प्राध्यापिकाएँ आती हैं। उनमें से दो खाने पर बैठती हैं। वे दोनों भी अनुसूचित जाति की होती हैं। ऐसी ही और एक घटना उन्होंने बताई है कि, वह जिस कालोनी में रहती है, वहाँ एक प्लौट उनको खरीदना होता है। परंतु इतने पैसे उनके पास नहीं होते हैं, तब वह पति के सहयोगी शिक्षक शर्मा जी के साथ आधा-आधा प्लॉट खरीदने की सोचती है। परंतु शर्मा जी यह बात टाल देते हैं। अत: वह प्लौट दूसरा कोई खरीद लेता है। लेखिका कहती है - ''जब भी हम उस प्लॉट के पास से गुजरते हैं, उस पर बने मकान को देखकर लगता है, हम भी ऐसा ही मकान बना लेते, यदि हमें धोखे में ना रखा गया होता।''[9]

अत: दलितों को हिंदुओं के जातिभेद के इरादों को पहचानकर अपने मान-सम्मान और अस्तित्त्व की पहचान करनी आवश्यक है। इस प्रकार लेखिका ने अपने अनुभवों को बताने की कोशिश की है। इसमें दलितों के मकानों की समस्या, भेदभाव की समस्या, खान-पान का परहे आदि

समस्याओं का चित्रण किया है। यहाँ समानता के नाम पर झूठे भूलावे का चित्रण किया है, जो मन को अधिक पीड़ित कर विचार करने को विवश करता है।

2.2.1.8 'नयी राह की खोज' -

यह कहानी है, उस युवक की, जो बुद्धिमान होते हुए भी घर में सभी अनपढ़ होने के कारण तथा आर्थिक विपन्नता के कारण कुछ नहीं कर पाता है। माँ-बाप अपने बच्चों को स्कूल भेजने से पहले यह नहीं सोचते कि पढ़ाई के बाद बेटा क्या करेगा ? परिणामस्वरूप बच्चे होशियार होकर भी मजदूरी करते हैं।

रामचंद का बेटा लालचंद बहुत बुद्धिमान है। इसलिए उसे कॉन्वेंट स्कूल में भेजा जाता है। घर का वातावरण तथा आर्थिक अभाव के कारण लालचंद आगे पढ़ नहीं पाता है। उसे कारपोरेशन की हिंदी प्रायमरी स्कूल में भेजा जाता है। उसे हिंदी अच्छी तरह से नहीं आती है। अतः उसकी पढ़ाई खत्म होती है। वह मैट्रिक भी नहीं हो पाता है। उसका नाम सफाई मजदूरों की लिस्ट में आता है। रामचंद के सभी सपने चूर-चूर हो जाते हैं। लालचंद कमाने लायक होता है तो घर के सभी बड़े-बड़े उसे गालियाँ देते और कहते - "कुछ करो, कुछ कमाओ, कब तक बैठकर दूसरों की कमाई खाओगे।"[10]

रामचंद अपने समाज के जागृत लोगों के साथ मिलकर एक 'जागरूक' नामक सामाजिक संस्था द्वारा लोगों के मन में शिक्षा के प्रति जागरूकता निर्माण करने का प्रयास करता है। लालचंद भी इस संस्था द्वारा अपने समाज के लोगों में जागृति निर्माण करके अनेक व्यवसाय शुरू करता है और दलित समाज की अनेक समस्याओं को सुलझाता है। लालचंद के बेटे और बेटियाँ कॉलेज में जाने लगते हैं। वह सोचता है कि अपने समाज के पढ़े-लिखे बच्चों को अपना पैतृक या परंपरावादी काम नहीं करने देंगे। इसलिए वे अनेक संस्थाओं का निर्माण करते हैं। इस संस्थाओं में अनेक बेरोजगारों को उनकी योग्यता के अनुसार काम दिया जाता है।

इस प्रकार दलित समाज के लोगों ने अपने समाज में जनजागृति निर्माण करके समाज को आत्मनिर्भरता और सम्मान की ओर बढ़ाया है। उन्होंने एक नई राह की खोज की है। अगर सभी लोग इसी राह पर चलेंगे तो समाज उन्नति ही कर सकता है।

इस कहानी में दलित समाज की स्थिति, शिक्षा की समस्या, नौकरी की समस्या और सामाजिक प्रगति की समस्याओं को उठाया है। इसमें परंपरागत सफाई के व्यवसाय को छोड़कर नई पीढ़ी अच्छे, सम्मानित व्यवसाय और नौकरी करें इस बात का संदेश दिया गया है। लेखिका ने दलितों को नई दिशा दिखाने का प्रयास किया है।

2.2.1.9 'धूप से भी बड़ा' -

इस कहानी में जातिभेद का चित्रण किया है। सुनील रोमा से शादी करके अपने बड़प्पन का परिचय देता है। रोमा सुशिक्षित लड़की होते हुए भी जातिभेद को मानती है। इसी जातीयता की भावना के कारण वह सच्चे प्रेम को पहचान नहीं पाती है। रोमा एक स्वतंत्र विचारोंवाली लड़की है। वह उच्च वर्णीय बड़े अधिकारी की इकलौती संतान होने के कारण वैभवपूर्ण और उन्मुक्त वातावरण में पली है। बी. ए. फायनल में पहुँचकर वह अपने सहपाठी सुंदर ख्रिश्चन बंटी से प्रेम करती है। दोनों मिलकर घरवालों के विरोध में कोर्ट मैरिज करते हैं। शादी के बाद बंटी रोमा से दूर हो जाता है। वह शराब के नशे में मस्त रहता है। रोमा उसे सही रास्ते पर लाने की कोशिश करती है। परंतु बंटी सुधरता नहीं है। रोमा को अपने किए पर पछतावा होता है।

रोमा सुनील की आँखों में बरसों से उसके प्रति प्रेम का भाव देखती है। फिर भी वह उसके प्रेम को कभी महत्त्वपूर्ण नहीं मानती है। सुनील रोमा से बहुत प्रेम करता है। जब रोमा की शादी बंटी से होती है, तो वह शादी न करने का फैसला करता है। रोमा सुनील को इसीलिए महत्त्व नहीं देती कि, वह पिछड़े वर्ग का है। वह सोचती है कि सुनील डॉक्टर है, परंतु शूद्र ही है। बंटी से तलाक देकर वह मायके आती है। सुनील के प्रति उसके विचार बदलते रहते हैं। वह उससे प्रेम करने लगती है। सुनील भी उसके सामने विवाह का प्रस्ताव रखता है। रोमा इस पर बहुत सोचती है। बहुत सोचने के बाद वह शादी के लिए तैयार होती है। दोनों कानूनी विवाह बंधन में बँधते हैं।

सुनील के घरवालों का प्रेम देखकर वह विभोर हो जाती है। वह एक समझदार गृहिणी बनती है। उसे अपने वहम पर अफसोस होता है कि, वह जातिवादी भावना के कारण सुनील के गुणों को देख नहीं पाई थी। अंत में वह सोचती है - ''निश्चय ही सुनील और उसका परिवार, सुनील का पूरा समाज सम्मानयोग्य है। सुनील का दिल सचमुच बड़ा है। सूरज से अधिक जीवनदायी, धूप से अधिक प्रकाशवान उसके विचार हैं। उसकी बराबरी वर्ण की उच्चता, जाति की श्रेष्ठता नहीं कर सकती। जिसके विचार उँचे हैं वह जाति-धर्म से उपर है, सबसे श्रेष्ठ और महान है।''[11]

इस प्रकार यह कहानी सवर्णों की मानसिकता, जातिभेद की भावना प्रस्तुत करती है। छोटी जाति के लोग छोटे नहीं हैं। वे धूप से भी बड़े होते हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि सुशीला जी ने इस कहानी संग्रह की कहानियों में दलित लोगों के एक अलग माहौल को हमारे सामने प्रस्तुत किया है। इस कहानी संग्रह की सभी कहानियाँ प्रभावशाली हैं। 'झरोखे', 'टूटता वहम', 'मेरा समाज' और 'मंदिर का लाभ' कहानियाँ आत्मकथात्मक हैं। अपने भाव-विचार, जीवन की घटनाएँ और अनुभवों को लेखिका ने इन कहानियों में चित्रित किया है।

2.2.2 अनुभूति के घेरे -

सन् 1997 ई. में प्रकाशित इस कहानी संग्रह में ग्यारह कहानियाँ हैं। इस कहानी-संग्रह की अधिक तर कहानियाँ दलित नारी से संबंधित हैं। ये कहानियाँ अनुभूतिजन्य एवं मनोविश्लेषणात्मक हैं। इनमें नारी मन का अंतर्द्वंद्व चित्रित हुआ है। इन कहानियों की प्रमुख विशेषता है - 'प्रतीक-योजना'। लेखिका ने प्रतीकों की सुंदर योजना की है। ये कहानियाँ सरल एवं सीधे कथानक पर आधारित हैं। इनमें नारी के अंतर्मन की परतें खोलने का प्रयास किया है।

नारी के पास अधिकार नहीं केवल कर्तव्य हैं, जिन्हें पूरा करते-करते वह इतनी थक जाती है कि जीवन की आखरी घड़ी तक वह अपने विषय में कुछ सोच ही नहीं पाती। उसके अंतिम समय में उसके पास एक टीस, वेदना और मौन चित्कार के अलावा कुछ भी नहीं बचता है। सभी कहानियाँ नारी जीवन की विवशता को उजागर करती है।

2.2.2.1 'भूख' -

इस कहानी में पति-पत्नी के सच्चे प्रेम को दिखाया है। प्रेम चाहे वह भिखारी का हो या राजा का, प्रेम तो प्रेम ही होता है। प्रेम की अनुभूति और गहराई उच्चतम होती है। पूर्णतः अभावग्रस्त तथा विकलांग होते हुए भी भिखारी अपनी पत्नी की शारीरिक और मानसिक भूख मिटाता है। दूसरी तरफ सब कुछ पास होकर भी लोग प्रेम और मन से भूखे ही रहते हैं।

'भूख' आत्मकथात्मक शैली में लिखी कहानी है। इसमें पति-पत्नी स्टेशन के प्लैटफार्म पर बैठे हैं। पति पत्रिका आदि खरीदने थोड़ी दूर चले जाते हैं। पत्नी अपने नजदिक यह दृश्य देखती है कि, एक भिखारिन बीमार है। वह पास ही लेटी है, दूसरी स्त्री उसके पास बैठी है। भिखारी बीमार स्त्री की बहुत चिंता करता है। उसे अच्छा खिलाने-पिलाने और खुश रखने का प्रयत्न करता है। यह देख कर पत्नी (लेखिका) अपने जीवन में प्रेम की कमी महसूस करती है। साथ ही उसे भूख लगती है। यह भूख मनोवैज्ञानिक, मानसिक भूख है। वह चाहती है कि उसका पति भी उसे इसी तरह प्रेम के साथ खिलाएं, बातें करें, उसकी चिंता करे और उसके लिए तरह-तरह के कष्ट उठाएँ। उनका अध्ययनशील, गंभीर और बद्धिवादी पति उसकी भावनाओं पर ध्यान नहीं देता। इससे उनकी पत्नी मानसिक रूप से प्रेम की भूखी रहती है। वह पति का एकनिष्ठ प्रेम चाहती है। मगर पति अपने अध्ययन, मनन, चिंतन में डूबे जैसे पत्नी की प्रेमलालसा की उपेक्षा करता है और उसके साथ तटस्थ व्यवहार करता है। भिखारी का पत्नी के प्रति प्रेम देखकर वह अचंभित होता है।

इस प्रकार इस कहानी में नारी की मानसिक स्थिति को चित्रित किया है।

2.2.2.2 'त्रिशूल '-

यह एक मनोवैज्ञानिक तथा स्वप्न शैली में लिखी कहानी है। इसमें नारी के अंतर्मन का द्वंद्व चित्रित किया है। मनुष्य के अंतर्मन में एक डर बैठा होता है, वहीं बार-बार उमड़कर आता है। व्यक्ति के जीवन में अनेक घटनाएँ घटती हैं। परंतु कुछ घटनाओं का प्रभाव जाने-अनजाने में व्यक्ति के स्वभाव पर रह जाता है। कभी सपने के रूप में भी कुछ घटनाएँ उजागर होती हैं।

इस कहानी में रेणु एक सपना देखती है कि वह पार्वती है और उसके प्रिय शिव उसके पास आना चाहते हैं। वह उन्हें पास नहीं आने देती है। क्योंकि पार्वती के पास उसकी बेटी मोहिनी है। शिव एक ट्रक में बैठा दिखाई देता है। वह वहीं से कहता है- 'आओ.... आओ यहाँ शहद भी है, और गुलाब जामुन भी है।' परंतु पार्वती अपनी बेटी को लेकर एक मिट्टी के घर में आती है। उस घर को दरवाज़े और खिड़कियाँ नहीं होती हैं। उस घर की तरफ एक शिव की धुँधली मुखाकृति दिखाई देती है। वह वही व्यक्ति है, जो ट्रक में बैठा होता है। अत: पार्वती दोनों के बीच जलती हुई लकड़ियाँ डालकर दोनों के बीच व्यवधान उपस्थित करती है। साथ ही वह चीखती भी है, परंतु उसकी आवाज गले के बाहर नहीं निकलती है।

रेणु की नींद खुलती है। घर, गृहस्थी, बेटा-बेटी, पति सबके बीच उलझी रेणु स्वप्नों के धागों को सुलझा नहीं पाती है। शिव द्वारा पुत्री मोहिनी से कहना - 'देखो यहाँ शहद भी है और गुलाब जामुन भी है' यह प्रेम की भावना का प्रतीक है। ट्रक की ड्रायविंग सीट से शिव का आना-प्रेमी का प्रतीक है। पार्वती का मिट्टी के घर में जाना रेणु का प्रतिरूप है। रेणुरूपी पार्वती को अपनी संतान से प्रेम है। संतान प्रेम की रक्षा के लिए वह अपने प्रिय के प्रेम को ठुकराती है। यह प्रिय रेणु का पति नहीं है, प्रेमी है, जो विवाह के पहले उसे चाहता था। परंतु विवाह नहीं हो पाया था। रेणु की यही अतृप्त प्रेम की भावना, स्वप्न रूप में दिखाई देती है। शिव की मुखाकृति धुंधली है क्योंकि रेणु ने अपने प्रेमी को बीस वर्ष पहले देखा है। त्रिशूल को भी प्रतीक रूप में रखा है।

रेणु बहुत परेशान होती है। उसे याद आता है कि बीस वर्ष पहले का युवक जो उसे प्रेम करता था और विवाह करना चाहता था। इसी प्रेमी के प्रेम की लालसा उसके अचेतन मस्तिष्क में थी, जो स्वप्न के रूप में दिखाई दी है।

हम समझते हैं कि हम किसी बात को भूल गए हैं, लेकिन वह बात हमारे मस्तिष्क के किसी कोने में छिपी रहती है। मनुष्य के मन की परतों के बीच अनेक भाव छूपे रहते हैं। कभी-कभी वे ही रूप बदलकर स्वप्न के रूप में दिखाई देते हैं और हम जीवन से जुड़े इन स्वप्नों को देखकर भी उसके कारणों को समझ नहीं पाते हैं। अत: नारी के मन में ये डर होता है कि वह उसके ही बारे में बार-बार सोचती है और बेवजह परेशान होती है।

2.2.2.3 *'सारंग तेरी याद में'* -

यह कहानी प्रतीकात्मक है। इसमें नारी के अंतर्मन की छटपटाहट का चित्रण मिलता है। इसमें बताया है कि आज की नारी स्वतंत्र होते हुए भी परंपराओं में किस तरह जकड़ी हुई है। इस कहानी को कभी सौदामिनी और कभी नानी की कहानी की राजकुमारी के माध्यम से दिशा मिली है। सौदामिनी राजकुमारी के माध्यम से अपने मन की बात बताने का प्रयास करती है। यह कहानी प्रेम के प्रति अतृप्त भावना की कहानी है। इस कहानी की कथावस्तु मनोविश्लेषणात्मक है। मन की स्थिति बदलने के साथ-साथ कथावस्तु भी बदलती है। इस कहानी में एक प्रसिद्ध पहेली का प्रयोग किया है - ''सारंग ले सारंग चली, कर गई सारंग की ओट-सारंग झीना देख कर, कर गयो सारंग चोट - ''[12]

सौदामिनी की नानी उसको एक राजकुमार की कहानी सुनाती है। राजकुमार राजकुमारी से बहुत प्रेम करता है। वह उसको विवाह का प्रस्ताव भेजता है। परंतु राजकुमारी उसे स्वीकार नहीं करती है। राजकुमार किसी दूसरी राजकुमारी से शादी करता है। राजकुमारी की शादी भी किसी राजा से होती है। दोनों अपने-अपने घर में सुखी रहते हैं। परंतु राजकुमारी की सहेली उसे राजकुमार के प्रेम के बारे में बताती है। मगर राजकुमारी अब धर्म और कर्तव्य में बँध चुकी है। फिर भी वह एक बार राजकुमार को देखने के लिए तरसती है। वह अपने राजा के साथ यात्रा पर जाती है तो उसे उस राजकुमार के यहाँ रूकना पड़ता है। तब वह राजकुमार को केवल देखती है। क्योंकि वह सामाजिक बंधन में बँधी हुई है। वह सोचती है - ''उसका अपना संसार अलग है, जहाँ वह पत्नी है, माता है और स्वामिनी है, जहाँ उसका सम्मान है, समाज में आदर है।''[13] राजकुमारी राजा के साथ अपने राज्य में लौट आती है।

सौदामिनी की नानी को कहानी अधूरी लगती है। वह नानी की कहानी में पूर्णता चाहती है। परंतु वह असंभव है। वे दोनों अपने घरों में संतुष्ट थे, परंतु यह सुख केवल सामाजिक दिखावे का है। यथार्थ में वे सुखी नहीं हैं। सौदामिनी कल्पना में दोनों को मिलाना चाहती है। परंतु असफल होती है। वह निराश होती है।

सौदामिनी को जो नहीं मिला वह राजकुमारी की कल्पना में देखती है। वह भी राजदीप से प्रेम करती है परंतु शादी नहीं हो पाती है। वह अपने पति के साथ सुखी नहीं रहती है।

उसके पहले प्रेम की चाहत उसके मन में मौजूद रहती है। समाज के रीति-रिवाज, मान-प्रतिष्ठा दोनों को अपनी जगह स्थिर रखते हैं। वे मिलकर भी नहीं मिल पाते हैं।

अंत में पहेली को बदल दिया है कि, एक सारंग की जगह दूसरा सारंग यानि प्रेमी क्यों नहीं हो सकता है। इन प्रयत्नों के बावजूद वह अपने संस्कारों के कारण असफल ही रहती है। इस प्रकार राजकुमारी का दुख सैदामिनी का दुख है। इस दुख का कारण प्रेम की अतृप्ति और समाज की रूढ़ियाँ हैं।

इस प्रकार इस कहानी में नारी मन की उलझन का विश्लेषण किया है। बातो-ही-बातों में बात को उलझाकर सुलझाते हुए कुछ पा लेने का प्रयत्न दिखाया है। इसमें यथार्थ है और कल्पना भी। नानी की कहानी में जीवन की घटनाओं को प्रतीक रूप में रखा गया है। सामाजिक, नैतिक मूल्य नारी को इतना बाँध देते हैं कि नारी अपने संस्कारों के कारण चाहकर भी अपने मन की बात नहीं बता सकती है। ऐसी नारी मन-ही-मन छटपटाती हुई अनेक कल्पनाओं से अपने मन को बहलाती रहती है और अंत तक अतृप्त रहती है।

2.2.2.4 'दिल की लगी' -

इस कहानी में प्रेमियों का चित्रण किया है। पति-पत्नी का रिश्ता समझौते पर निर्भर करता है। हठ से वह टूट भी सकता है या उसमें दरार भी आ सकती है। इस कहानी की शफिया मौसी दिखने में सुंदर है। इसी कारण उसमें अहं बहुत है, वह स्वयं को किसी बंधन में बाँधना नहीं चाहती है। मौसा के साथ उसकी बनती नहीं है। मौसा के रौब जतानेवाले स्वभाव को मौसी सहन नहीं करती है। मौसी ने उसके साथ कभी समझौता नहीं किया। वह मौसा से अलग रहती है।

इस कहानी में स्यानी और ईश्वरदास इन दो प्रेमियों का सच्चा प्रेम दिखाया है। ईश्वरदास व्यवहार और विचारों से बहुत अच्छा है। वह स्यानी से बहुत प्रेम करता है। स्यानी दिखने में बिल्कुल अच्छी नहीं है। वह काली-कलूटी और कुरूप है। शफिया मौसी उसके बारे में कहती है - ''अरे वह, वह मेंढ़की, जरा-जरा-सी आँखें हैं। एक अक्षर नहीं पढ़ी, कहां के कहां लड़के को फाँस के बैठी है। लड़का तो हीरे जैसा है। उस जरा-सी मेंढ़की के चक्कर में ऐसी सुंदर, गुणवत्ती, पढ़ी-लिखी

और शीलवती लड़की से शादी को मना कर दी..... वाह परमेश्वर, वाह .... दिल की लगी भी क्या चीज होती है ? दिल लगा मेंढ़की से तो पद्‌मनी का क्या काम ! धन्य हो ..... धन्य हो।"[14]

ईश्वरचंद और स्यानी दोनों शादी करते हैं। शादी के बाद भी एक-दूसरे को बहुत चाहते हैं। शादी के कुछ दिन पश्चात् स्यानी जचकी में मर जाती है। ईश्वरदास को इस बात का पता चलते ही वह रेल के नीचे अपनी जान देता है। इस प्रकार वे दोनों अमर हो जाते हैं। शफिया मौसी को बहुत अफसोस होता है कि उसने अपनी सुंदरता के सामने प्रेम को महत्त्व नहीं दिया।

इस प्रकार इस कहानी में सच्चे प्रेम का चित्रण किया है। प्रेम सुंदर-असुंदरता नहीं देखता है। तन की अपेक्षा मन का मिलन ही सर्वोत्तम होता है। प्रेम के लिए सुंदर तन की अपेक्षा स्वच्छ, पवित्र मन महत्त्वपूर्ण होता है।

2.2.2.5 'हमारी सेल्मा' -

इस कहानी में नारी कुंठा तथा उसके अकेलेपन का चित्रण किया है। हर व्यक्ति के जीवन में कुछ-न-कुछ घटनाएँ घटित हो जाती हैं। परंतु कुछ जाना-अनजाना प्रभाव उसके व्यवहार में सदा के लिए स्थायी हो जाता है, जिसे सुविधा की दृष्टि से किसी व्यक्ति-विशेष का स्वभाव कह दिया जाता है।

सेल्मा किसी एक तणाव या किसी व्यवहार के कटु प्रभाव से इतनी कुंठित हो गई है कि जिसके फलस्वरूप वह अकेली रह गई है। शायद उसके जीवन में कोई घटना घटी हो। सेल्मा बचपन से बहुत स्वाभिमानी और जिद्‌दी है परंतु शादी के बाद पति के साथ उसकी नहीं बनती है। न जाने पति के कौनसे कठोर व्यवहार ने उसके मन में असमझौते की ग्रंथी डाल दी है। परंतु सेल्मा में अहंभाव ज्यादा है, जिसके कारण वह कभी सामंजस्य का भाव नहीं रखती है। अपने पति, बेटा और बहू के साथ रहकर भी मौन एकांत ही उसका साथी रहता है। बेटा-बहू उससे अलग रहते हैं, फिर भी उसका मौन टूटता नहीं है। वह घर के सभी काम चुपचाप करती है। पति के साथ रहकर भी वह अकेली, मौन और अंतर्मुख रहती है।

व्यक्ति में परिवर्तन आने के लिए समय लगता है। बचपन का जिद्‌दी स्वभाव अपनी गलती मानने के लिए तैयार नहीं होता है। जब तर्क-विवेक-बुद्‌धि को सही मार्ग दिखाया जाता है, तब समय के साथ समझौता भी किया जाता है। जीवन की अंतिम अवस्था में अस्वस्थ सेल्मा अपने अहं, स्वाभिमान, दृढ़ निश्चय और मानापमान की परिभाषा बदलने का प्रयत्न करती है। उसने समझौता करना सिखा है और अपनी जिद्‌द को स्वयं तोड़ दिया है। सेल्मा को कैंसर हो जाता है। इसी कारण जहाँ से भी मिल सके, खुशियों की बूँदे बटोर लेना चाहती हैं। जैसे उसने अपने जीवन का पुनर्मूल्यांकन किया हो।

इस प्रकार हर व्यक्ति को अपने जीवन का पुनर्मुल्यांकन करना आवश्यक है। क्योंकि अपनी जिद के कारण किसी समय-विशेष में कुछ खो देने का दु:ख किसी को भी जीवनभर होता है। काल की गति बढ़ती ही है, किंतु व्यक्ति अपने अतीत को देख सकता है कि उसमें उसने क्या खोया और क्या पाया है। आखिर अंजाम यही हो सकता है कि मन की बातें मन में ही रहने दें। जिंदगी सही अर्थों में कुछ समय के लिए सही मिले तो भी क्या कम है। अज्ञेय जी के उपन्याय 'अपने-अपने अजनबी की प्रमुख नारी पात्र सेल्मा में अहं, कुंठा, स्वार्थ-व्यक्तिवाद के सभी भाव और विकार मौजूद हैं। कुछ मात्रा में ये भाव इस कहानी की सेल्मा में भी हैं। परंतु अज्ञेय की सेल्मा से इस सेल्मा में कुछ अलग और विशेष बातें नजर आती हैं।

2.2.2.6 'प्रतीक्षा' -

'प्रतीक्षा' एक तरफा प्रेम की कहानी है। किसी के प्रति मन में अनुराग निर्माण हो जाए तो व्यक्ति उसी के बारे में सोचता रहता है। उसी की प्रतीक्षा में जीवन बीताता है। परंतु जिस व्यक्ति से प्रेम हो जाता है वह अगर इन बातों से अनजान हो तो क्या फायदा ?

इस कहानी में सुमन के एक तरफा प्रेम का चित्रण है। सुमन प्रकाश से प्रेम करती है। उसने उसे किसी समारोह में देखा है। परंतु प्रकाश इस बात से अनजान है। सुमन को विश्वास होता है कि वह भी उससे प्रेम करता है। वह मन-ही-मन उसकी प्रतीक्षा करती है। वह युवती से प्रौढ़ हो जाती है लेकिन प्रतीक्षा का भाव मन में बना रहता है।

स्त्री बहुत ही भावुक और संवेदनशील होती है। सुमन के ऑफिस में विनय की क्लर्क पद के लिए नियुक्ति होती है। उसे देखकर सुमन जिंदगी की बीती घड़ियों में खो जाती है। सुमन को अपने प्रेम पर इतना विश्वास होता है या वह प्रेम के प्रति इतनी एकरूप होती है कि विनय को देखकर उसे लगता है - ''कहीं ऐसा तो नहीं, प्रकाश ने मेरे लिए नया जन्म लिया हो ? पुनर्जन्म क्या असंभव है।''[15] उसे लोकलाज की चिंता होती है कि कहीं ऑफिस के लोग उसे गलत न समझे। सुमन उच्चशिक्षित और समझदार होकर भी अपने बारे में निर्णय नहीं ले पाती है। विनय की स्नेहपूर्ण बातों से उसके मन में असमंजस का भाव पैदा होता है। वह विनय के घर में प्रकाश की तस्वीर देखकर अचंभे में पड़ती है। वह तस्वीर प्रकाश की होती है, जिसकी प्रतीक्षा में उसने अपना जीवन अविवाहित रहकर व्यतीत किया था। उसने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि प्रकाश की शादी हुई होगी और उसका बेटा विनय उसके जैसा ही दिखेगा। प्रकाश की गृहस्थी की हरी-भरी बगिया देखकर उसे अपना जीवन विरान रेगिस्तान की तरह लगता है, जिसमें वह अकेली भटकती है। वह स्वयं को तर्क-वितर्क में तौलती है - ''क्या उसने गलती की है ? एक तरफा प्रेम की मृग-मरीचिका के पीछे भागती रही, शून्य में सुख ढूँढ़ती रही.... और अब उसके सामने क्या शेष रहा है ? जीवन का उद्देश्य क्या रह गया है।''[16]

सुमन को बहुत पछतावा होता है। उसका आत्मसम्मान जाग उठता है। उसमें प्रेमभाव के स्थान पर विश्वकल्याण की भावना जागती है। उसके पास शिक्षा, पद और सम्मान सब हैं। वह कहती है कि प्यार करना है तो पूरे विश्व से करूँगी। समाज में बहुत दु:ख, गरीबी है, उनके लिए काम करेगी।

सुमन अंत में सोचती है - ''आज से मेरे विचार, मेरा चिंतन किसी एक नाम, किसी एक व्यक्ति तक सीमित नहीं रहेगा, दुनिया बहुत बड़ी है, मेरे जीवन का उद्देश्य और जीवन का आधार बहुत बड़ा असीम दिगंत तक फैला होगा, जिसमें लाखों करोड़ों लोग होंगे। उनमें विनय भी होगा, प्रकाश भी होगा, तब मुझे किसी एक प्रकाश के नाम की जरूरत नहीं होगी। प्रकाशपुंज मेरे साथ में होंगे। मेरा मार्ग प्रकाशमय होगा, मेरा लक्ष्य प्रकाशमय होगा, मेरा जीवन प्रकाशमय होगा - मैं स्वयं दूसरों को प्रकाश दे सकूंगी।''[17]

अतः प्रेम मनुष्य जीवन की अनमोल वस्तु है, जिसके बारे में थोड़ी-सी जानकारी मिलते ही मन भटकने लगता है। किसी के प्रेम में एकरूप रहना अच्छी बात है परंतु उसकी प्रतीक्षा में जिंदगी व्यर्थ बीताना विसंगत है। स्त्री भावुक होती है फिर भी उसे सोचना चाहिए कि जीवन का उद्देश्य क्या है ? और उस उद्देश्य की पूर्ति के लिए क्या करना होगा ?

2.2.2.7 ***'कैसे कहूँ'*** -

इस कहानी में नारी मन के द्वंद्व का चित्रण किया है। भारतीय नारी छोटी-सी बातों पर भी बहुत विचार करती है। अपने मतानुसार कोई भी अनुमान लगाकर मन-ही-मन आनेवाले परिणामों के बारे में सोचकर बेकार ही डरती है। उसमें इतना साहस नहीं होता है कि वह अपनी बात को सीधे कह सके।

इस कहानी की कुसुमांजली एक साहित्यकार है। उसे किसी पाठक का प्रेमपत्र आता है। एक स्त्री-लेखिका को पाठक का प्रेमपत्र आना धर्म संकट की बात हो सकती है। उसके मन में द्वंद्व चलता है कि यह बात किसी को बताए या नहीं। वह अपने पति को कहने से भी डरती है। क्योंकि वे कहीं गलत न समझे। वह एक साहित्यकार होकर भी अपनी बात किसी को बताने का साहस नहीं करती है।

कुसुमांजली यह बात अपनी सहेली को बताना चाहती है। मगर वह सोचती है कि उसे इस संबंध में कहना गलत होगा। क्योंकि वह अपने मन का कुछ जोड़कर अपने नज़रिए से समाज के सामने पेश करेगी। नारी हर बात के प्रति सजग रहती है। वह सोचती है - ''हर भारतीय नारी-चाहे वह हिंदू, मुस्लिम, सिक्ख, बौद्ध, जैन, पारसी, ईसाई-कुछ भी हो, मानसिक रूप से नैतिक आधार पर वह यह मानकर चलती है कि, उसका पति ही सामाजिक प्रतिष्ठा दे सकता है। एक से अधिक पति या पति होने के साथ प्रेमी का होना उसे सामाजिक प्रतिष्ठा नहीं दे सकता।''[18] अंत में हिम्मत के साथ वह प्रेमपत्र पति को दिखाती है। परंतु पति पर इस बात का कोई असर नहीं होता है। वे कहते हैं, साहित्यकार होते हुए उसे इतनी-सी बात पर विचार नहीं करना चाहिए।

अत: यह स्पष्ट है कि भारतीय नारी स्त्री-पुरुष समानता तो चाहती है लेकिन भारतीय संस्कृति की मर्यादा को भी वह तोड़ना नहीं चाहती है। वह पतिव्रता धर्म श्रेष्ठ मानती है। समाज की दृष्टि में उसकी सामाजिक मर्यादा महत्त्वपूर्ण मानती है।

2.2.2.8 'घर भी तो जाना है' -

इस कहानी में आज के व्यस्त तथा आपाधापीपूर्ण जीवन का, कामकाजी नारी की व्यस्तता का चित्रण किया है। साथ ही शासन व्यवस्था की लापरवाही तथा नियमों के खोखलेपन को बताया है।

इस कहानी की आशा एक कामकाजी नारी है। वह स्कूल में शिक्षिका है। घर का काम, बच्चों को स्कूल छोड़ना, फिर स्कूल जाना, आते वक्त बच्चों को स्कूल से लेते आना आदि काम उसे करने पड़ते हैं। आशा की बेटी के. जी. में पढ़ती है। वह उसे स्कूल से लाने के लिए जाती है। परंतु स्कूल में 'बालक दिवस' का कार्यक्रम मनाने के कारण छुट्टी नहीं हुई होती है। आशा प्रतीक्षा करती बाहर बैठती है। उसे स्कूल जाने में दो मिनट देर हो जाती है, तो इंचार्ज की डाँट पड़ती है। वह देर होने का कारण बताती है परंतु वह बिल्कुल नहीं सुनती है। इंचार्ज मुंह फूलाते कहती है - "और हां, पेपर के बंड़ल जाँच कर जल्दी ही वापस करना। मैं अभी नोटिस निकाल रही हूँ।"[19] आशा को स्कूल से आते वक्त बेटी को लेना होता है। बस स्टॉप पर पूरा एक घंटा जाता है। बेटी के स्कूल में आती है तो कार्यक्रम अभी भी शुरू था। वह बहुत गुस्सा होती है।

आज एक तरफ सिर्फ नियमों के निर्देश कर काम किया जाता है। दो मिनट का भी समझौता नहीं होता। तो दूसरी तरफ नियम और वक्त का कोई मूल्य नहीं है। साथ ही यह भी बताया है कि नारी कितना व्यस्त रहती है। आज की कामकाजी नारी इतनी व्यस्त है कि उसे घर का सब काम संभालकर नौकरी करनी पड़ती है। अगर उसे स्कूल के लिए देर हो जाए तो उसे सभी नियम दिखाए जाते हैं। भले ही बस स्टॉप पर घंटों मक्खियाँ मारनी पड़े। बस के कर्मचारी अपने काम में लापरवाही करे तो उन्हें कोई डाँटता नहीं है। अगर बस ही लेट आए तो देरी होगी ही। परंतु हर एक दूसरों को ही नियमों में बांधने की चेष्टा करता है।

2.2.2.9 *'बंधी हुई राखी'* -

यह कहानी भाई-बहन के रिश्ते पर आधारित है। खून के रिश्ते से बढ़कर मुँह-बोले रिश्ते में अपनापन होता है। परंतु वर्तमान युग में इन पवित्र रिश्तों का महत्त्व कम होता जा रहा है। आज रक्षाबंधन जैसे पारंपारिक त्यौहार में औपचारिकता दिखाई देती है। परंपरा के अनुसार भाई बहन की रक्षा करता है। परंतु वर्तमान युग में भाई-बहन के रिश्ते में औपचारिकता आने लगी है। शहरों में रहनेवाली, उच्च शिक्षा प्राप्त, नौकरी करनेवाली बहनें अब इस परंपरा को औपचारिक मानती हैं। मायके जाकर भाई को अपने हाथों से राखी बांधने की अपेक्षा राखी को लिफाफे से भेजती है।

लेखिका स्वयं इस रिश्ते के प्रति तटस्थ रहती है। इस कहानी का हरिश स्वभाव से बहुत चंचल है। स्नेह का प्यासा है। लेखिका के सहयोगी शिक्षक के रूप में उसकी नियुक्ति होती है। आते ही वह रिश्ते-नाते जोड़ना शुरू करता है। लेखिका को वह अपनी बहन मानता है। परंतु वह इस रिश्ते के प्रति तटस्थ रहती है। वे सोचती है - ''शहर की मशीनी जिंदगी में जब अपने ही घर-परिवार की जिम्मेदारी निभाना कठिन हो रहा है, तब यूँ ही कोई और रिश्ता बना लेना और उसे निभाते रहने की बात सोचना सरल या आसान नहीं हो सकता। मुँह बोले रिश्तों को स्थिर, सामाजिक रिश्तों जैसा स्थायित्त्व देना याने जीवनभर के लिए कर्तव्य और जिम्मेदारी में बंधना है। इतना वक्त कहाँ है।''[20]

रक्षाबंधन के दिन लेखिका हरीश को अपने घर नहीं बुलाती और न ही हरिश उनके घर जाता है। दूसरे दिन लेखिका ने देखा, उसकी कलाई पर राखी बंधी हुई होती है। उनको अच्छा लगा परंतु उसकी बंधी हुई राखी खुल जाती है तो वह लेखिका को बांधने को कहता है। राखी बांधते ही वह शरारत से 'मेरी अच्छी दीदी' कहकर भाग जाता है। उसकी कोई बहन न होने के कारण वह लेखिका को ही अपनी बहन मान लेता है।

इस प्रकार व्यक्ति अपनी ही चिंताओं और मनोविकारों से ग्रस्त है, जिसके फलस्वरूप वह एक-दूसरे के प्रति नीरस और निर्विकार भाव रखते हैं। उनके व्यवहार में औपचारिकता अधिक दिखाई देती है।

2.2.2.10 'गलती किसकी है' -

इस कहानी में पारिवारिक समस्या को उठाया है। इसमें बताया है कि समान परिवेश होकर भी संस्कारों के अभाव में बच्चे बिगड़ते हैं। आज बेटे बेटी को समान अधिकार होते हुए भी दोनों में फर्क किया जाता है। आज बेटे की अपेक्षा बेटियाँ ही ज्यादा प्रगति करती हैं। माँ बाप की लापरवाही तथा कुसंग के कारण बेटे बिगड़ते हैं।

इस कहानी में अनीता और सुनीता दोनों सगी बहनों की शादी एक ही घर में दो सगे भाइयों से होती है। उनके पति रमेश और महेश समान पद पर नौकरी करते हैं। अनीता बड़ी जेठानी होने के नाते सुनीता पर रोब जमाती है। उसे तीन बेटे होने का बहुत गर्व है। वह अपने बेटों पर बहुत खर्चा करती है। सुनीता की तीन बेटियाँ हैं। वह अपनी बेटियों की पढ़ाई के लिए सारा खर्चा हाथ रखकर करती है। उनकी पढ़ाई पर पूरा ध्यान देती है और उन पर अच्छे संस्कार भी करती है।

अनीता और उनके पति हमेशा सुनीता से बढ़-चढ़कर बातें करते हैं। वे दोनों सुनीता और उसके पति का उपहास करते हैं। महेश ऊपरी सहानुभूति से कहता है - ''अरे लड़कियों, तुम्हें इसी घर में आना था क्या ? मेरे छोटे भाई को तुम लोगों ने चिंता में डाल दिया है। बेचारा, कैसे तुम तीनों का दहेज जुटाएगा, कैसे तुम्हारी शादी का बोझ उठाएगा ? वह तो जिंदगीभर कर्जे में दबा रहेगा ! तुम लोगों को मेरे भाई के घर ही आना था.... क्या..... ?''[21]

लाड़-प्यार के कारण अनीता के बेटे बिगड़ते हैं। बड़ा बेटा किसी बदमाश औरत के चक्कर में फँसता है और उससे ही शादी करना चाहता है। उसके छोटे भाई भी उसका चाल-चलन और व्यवहार का अनुकरण करते हैं। अनीता के तीनों ही बेटे आवारा निकलते हैं। सुनीता उसे बहुत समझाने की कोशिश करती है। परंतु अनीता पर कोई असर नहीं होता है। सुनीता की तीनों बेटियाँ बहुत ही गंभीर, परिश्रमी और बुद्धिमान हैं, क्योंकि वह उन पर अच्छे संस्कार करती आ रही है। बड़ी बेटी सुषमा एम्.ए., बी. एड्. करके नौकरी करती है और अपनी छोटी बहनों को भी पढ़ाती है। अंत में अनीता बहुत पछताती है। वह अपनी गलती मान लेती है और निराश और दुःखी होती है।

इस प्रकार इस कहानी में बच्चों के जीवन में संस्कारों का महत्त्व बताया है। साथ ही स्त्री-शिक्षा को भी महत्त्व दिया है। माँ-बाप का कर्तव्य बनता है कि वे अपने बच्चों को प्यार और सम्मान के साथ उनके व्यक्तित्व के विकास में पूरा योगदान दें।

2.2.2.11 'सही निर्णय' -

इस कहानी में नौकरी की भागदौड़ में संत्रस्त नारी का चित्रण किया है। साथ ही बेटा और बेटी के महत्त्व को भी बताया है। आज भी बेटा और बेटी में फर्क किया जा रहा है। आज की नारी शिक्षित होकर भी कुलदीपक के रूप में बेटा ही चाहती है। साथ ही यह भी बताया है कि आज की भागदौड़ की जिंदगी तथा महंगाई के कारण बच्चों की देखभाल करना कितना कठिन हो रहा है।

इस कहानी की इंदु एक शिक्षिका और समाज सेविका है। उसकी दो बेटियाँ हैं। घर के काम के साथ बेटियों की देखभाल, नौकरी की भागदौड़ इसके कारण इंदु बहुत चिढ़-चिढ़ी बनती है। तीसरी बार वह पाँच माह का गर्भपात करवाती है। उसे बहुत दुख होता है। वह कुलदीपक को अपने हाथों बुझा देती है। साथ में ये भी परेशानी होती है कि बच्चे को संभालेगा कौन ? इंदु बेटा न होने का दुख नहीं भूलती है।

दूसरी ओर नारी नि:संतान होकर भी दूसरों के बच्चे को गोद लेकर उनकी देखभाल में अपना दुख भूल जाती है। इंदु अपने देवर और देवरानी गोद ली बेटी रीना के साथ प्रसन्न और संतुष्ट देखती है तो उसे उनसे बहुत प्रेरणा मिलती है। उसकी सहेली कुसुम, जिसने अपनी बहन की बेटी को गोद लिया होता है। उसका उस बच्ची के प्रति प्रेम देखकर इंदु का ह्रदय कचोटने लगता है। वह दो बेटियों की माँ होकर भी उन्हें कभी दिल से प्यार नहीं कर सकी है। उसे बहुत पछतावा होता है। वह मन ही मन कहती है - ''छि: ! कितनी परंपरावादी है वह ? इतनी पढ़ी है एम्.ए., बी. एड्. फिर भी उसके विचार कितने संकीर्ण और स्वार्थपूर्ण हैं ? उससे तो कम पढ़ी-लिखी रीना और तृप्ति की अनपढ़ दादी-ओह !''[22] इन सब बातों को सोचकर इंदु शर्म से गढ़ जाती है।

बहुत सोच-विचार के बाद इंदु फेमिली प्लानिंग का ऑपरेशन करा लेती है। अपनी दो बेटियों पर ज्यादा ध्यान देने लगती है। वह निर्णय लेती है कि बेटा न होने का अफसोस वह कभी नहीं करेगी। अपनी बेटियों को ही खूब पढ़ा-लिखाकर बहुत ऊँचाई तक पहुँचाएगी।

स्पष्ट है कि आज की नारी शिक्षित होकर भी उसके विचार कितने संकीर्ण और स्वार्थपूर्ण लगते हैं। परंतु उसका इस संकुचित विचारों के घेरे से बाहर आना महत्त्वपूर्ण है।

निष्कर्ष -

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि सुशीला जी आधुनिक काल की ऐसी कहानीकार हैं, जिनकी कहानियों ने दलित समाज के लोगों में नया परिवर्तन लाने का प्रयास किया है। सुशीला जी दलित समाज के लोगों की निराशा, दिशाहीनता और नारी मन के अंतर्द्वंद्व को एक खास अंदाज में प्रस्तुत करनेवाली लेखिका हैं। वे अपनी कहानियों के माध्यम से दलित जनता के जीवन की सच्चाई का पूरा साक्षात्कार करना चाहती हैं। इनकी कहानियों में अन्याय, अत्याचार और शोषण के खिलाफ विद्रोह दिखाई देता है। साथ ही दलित लोगों में हो रहे बदलाव को भी दिखाया है। उन्होंने अपनी कहानियों में हिंदू दलित समाज का सजीव चित्रण किया है। छुआछूत, जातिभेद, शोषण अशिक्षा आदि के साथ ही सवर्ण समाज के ऊपरी दिखावे को भी चित्रित किया है। साथ ही धार्मिक आडंबरों को भी दिखाया है। उन्होंने अपनी कहानियों में अपने अनुभवों को सोच-विचार के साथ व्यक्त किया है। इसी कारण उनकी कहानियाँ पाठकों को व्यक्तिगत जीवन से परे नहीं लगती हैं।

सुशीला जी ने नारी के जीवनसंबंधी अपने विचार प्रकट किए हैं। उन्होंने नारी मन के अंतर्द्वंद्व का अंकन अच्छी तरह से किया है। उन्होंने परंपराओं का पालन करती हुई नारी का चित्रण किया है। साथ ही नारी शिक्षा को भी महत्त्व दिया है। 'सिलिया' और 'प्रतीक्षा' कहानी में आत्मनिर्भर होती नारी का चित्रण है।

'सही निर्णय', 'घर भी तो जाना है' कहानियों में कामकाजी नारी का चित्रण है। 'त्रिशूल', 'सारंग तेरी याद में' और 'भूख' आदि कहानियों में नारी का अंतर्द्वंद्व दिखाया है। 'टूटता वहम', 'सिलिया' और 'मेरा समाज' कहानियों में सवर्णों के ऊपरी दिखावे का चित्रण है। 'मंदीर का लाभ', 'धूप से भी बड़ा' कहानियों में छुआछूत और जातिभेद का चित्रण किया है।

संक्षेप में सफल रचनाकार के लिए जिस मानवीय संवेदना और आम आदमी के प्रति चिंता अपेक्षित होती है, वह सुशीला जी की कहानियों में पूरी संभावना और क्षमता के साथ उभरी है। अतः हम कह सकते हैं कि एक अदम्य जिजीविशा लिए हुए कहानियाँ लिखनेवाली सुशीला जी हिंदी साहित्य की समाज चेतना से प्रतिबद्ध कहानीकार हैं।

संदर्भ सूची

1. डॉ. प्रतापनारायण टंडन, हिंदी कहानी कला, पृ. 258
2. डॉ. सुशीला टाकभौरे, टूटता वहम, पृ. 26
3. वही, पृ. 28
4. वही, पृ. 49
5. वही, पृ. 52-53
6. वही, पृ. 58-59
7. वही, पृ. 61
8. वही, पृ. 80
9. वही, पृ. 79
10. वही, पृ. 83
11. वही, पृ. 106
12. डॉ. सुशीला टाकभौरे, अनुभूति के घेरे, पृ. 26-27
13. वही, पृ. 39-40
14. वही, पृ. 47
15. वही, पृ. 57
16. वही, पृ. 63
17. वही, पृ. 64
18. वही, पृ. 69
19. वही, पृ. 74
20. वही, पृ. 79-80
21. वही, पृ. 83
22. वही, पृ. 96